डा. जयन्त रंगपी : राष्ट्रपति के अभिभाषण में भी इसका उल्लेख नहीं किया गया है।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अब आप राष्ट्रपति के अभिभाषण की बात मत कीजिए। हम विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा कर रहे हैं। कृपया बैठ जाईए। मेरी उदारता का लाभ मत उठाईए।

डा. जयन्त रंगपी : महोदय, मैं इस सरकार का और विश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री पी.सी. थामस (मुबुतुपुजा) **:** महोदय, मुझे खेद है कि मैं इस प्रस्ताव का विरोध करने के लिए विवश हूं। मुझे इसलिए खेद है क्योंकि श्री वाजपेयी जी एक ऐसी शख्सियत हैं, जिसकी सभी लोग सराहना करते हैं। परन्तु मुझे इसलिए भी खेद है कि भा.ज.पा. द्वारा जो आश्वासन दिये गये, अपने धर्म निरपेक्ष बने रहने तथा सम्पूर्ण राष्ट्र की परिक्षा करने का सभी दलों से जो वादा किया गया उस पर पूर्व में जो कुछ हुआ उसको देखते हुए विश्वास नहीं किया जा सकता। मुझे याद है गत लोक सभा में एक समिति थी जिसमें यहां के कई सदस्य शामिल थे जो अयोध्या गये थे। हमने वहां भा.ज.पा. नेताओं से बातचीत की थी। इस संबंध में रिपोर्ट दी गई थी और हम सबको यह विश्वास था कि कुछ ठोस कार्रवाई होगी क्योंकि यह आश्वासन दिया गया था कि धर्म निरपेक्षता की परिरक्षा की जाएगी। मस्जिद को ध्वंस नहीं किया जाएगा। समिति को यह आश्वासन दिया गया था। इसके अलावा उच्चतम न्यायालय को भी ऐसा आश्वासन दिया गया था कि मस्जिद को ध्वंस नहीं किया जायेगा। परन्तु मुझे खेद है कि भा.ज.पा. सदन में, उच्चतम न्यायालय को तथा जनता को दिये दिये गये सभी आश्वासनों से मुकर गई। परन्तु मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी इस मुद्दे पर हमेशा अलग रूख अपनाते आये हैं अथवा श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के भाषणों में हमें आशा की कुछ किरणें दिख पड़ी है। मैं यह कहने के लिए विवश हूं कि जहां तक सरकार बनाने का संबंध है इस समय भा.ज.पा. का विश्वास पूरी तरह से टूट चुका है और भा.ज.पा. स्वयं इस बात को जानती है। जहां तक सरकार बनाने का संबंध है मुझे खेद है कि इन अन्तिम क्षणों में जबकि बोलने के लिए केवल आधा मिनट शेष है, मुझे कट्टरता पूर्वक इसका विरोध करना पड़ रहा है और मैं भारत का एक नागरिक होने के नाते ऐसा कर रहा हूं।

[हिन्दी]

श्री रघुनंदन लाल भाटिया (अमृतसर) **:** आज बरनाला जी ने हाउस को बहुस मिस्लीड किया है और मैं उनकी बातों को रिफ्यूट करना चाहता हूं।...**(व्यवधान)** पंजाब में उग्रवाद अकालियों ने फैलाया है। 5 हजार कांग्रेसियों ने पंजाब में अपनी जानें दी है।.. **(व्यवधान)** ये लोग उग्रवादियों से मिलने गये, इन्होंने उग्रवादियों को पुरस्कार दिये।...**(व्यवधान)** मैंने तीन गोलियां खाई हैं।...**(व्यवधान)** इन्होंने कहा कि अकाली 6 बार सत्ता में आए तो इन्हें कांग्रेसियों ने राज नहीं करने दिया।...**(व्यवधान)** जब ये सत्ता में थे तो आपस में लड़ते थे और जब बाहर होते थे तो हमसे लड़ते थे। यही लोग हैं जिन्होंने उग्रवादियों को पुरस्कार दिये।...**(व्यवधान)** ये बात पंजाब के बी.जे.पी. वालों से पूछिये।...**(व्यवधान)** ये उग्रवादियों के साथी हैं। उनको पुरस्कार देने वाले हैं। ये कन्डेम करने के लायक हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री रघुनंदन लाल भाटिया जी, बहुत हो चुका है।

[हिन्दी]

श्री सुखबीर सिंह बादल (फरीदकोट) **:** ये सिंखों के कातिल हैं।..**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री रघुनंदन लाल भाटिया जी, आप इस सदन के बहुत ही अनुभवी सदस्य हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : श्री प्रभु दयाल कठेरिया जी, कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यदि कोई सदस्य सदन को गुमराह करता है तो आप दूसरा उपाय अपना सकते हैं। आप विशेषाधिकार प्रस्ताव ला सकते हैं। परन्तु इस तरह से कह देना कि तुमने सदन को गुमराह किया है, कोई तरीका नहीं है। आप उचित नोटिस दे सकते हैं।

[हिन्दी]

श्री सुखबीर सिंह बादल : पंजाब के आदमियों ने इनके खिलाफ वोट दिया है।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह कोई तरीका नहीं है।

[हिन्दी]

शांति से सुनिये। प्लीज शांति से सुनिये।

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, इस कोलाहल के बाद अगर सदन मुझे शांति से सुनने के लिये मन बना सके तो मैं बहुत आभारी होउंगा। मेरे प्रस्ताव पर हुई चर्चा में जिन्होंने भाग लिया है, मैं उन सब को धन्यवाद देना चाहता हूं। यह सदन शांतिपूर्ण चर्चा के लिये, संयमपूर्ण चर्चा के लिये और तर्कपूर्ण चर्चा के लिये है। कुछ मित्रों का प्रयत्न था कि कोई चर्चा न हो,

तत्काल वोट ले लिया जाये और वे यहां से निकलते ही कुर्सी पर जाकर बैठ जायें।...**(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : ऐसा ही होगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उधर से आवाज आ रही है कि ऐसा ही होगा और आवाज कांग्रेस के बैंचों से आ रही है। हमारे और मित्र थोड़ा सा सावधान रहें।

अध्यक्ष महोदय, संसद में मैंने 40 साल गुजारे हैं। ऐसे क्षण बार-बार आये हैं। सरकार बनी हैं, बदली हैं, नई सरकारों का गठन हुआ है लेकिन लोकतंत्र...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया इस प्रकार की टिप्पणियां मत करिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लेकिन हर कठिन परिस्थिति में से भारत का लोकतंत्र बलशाली होकर निकला है और मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा में से भी बलशाली होकर निकलेगा।

अध्यक्ष महोदय, मैंने 40 साल आलोचना की है। आज भी अधिकांश आलोचना सुननी पड़ी है। मराठी में एक कहावत है "निदकाचे घर असावे शेजारी" अर्थात् निन्दक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय, निन्दा करने वाले को पास में रखना चाहिये, नहीं तो चापलूस बिगाड़ देंगे। अगर निन्दक रहेगा तो बिना साबुन और पानी के सफाई करता रहेगा। जिन मित्रों ने...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री राम नाईक : ऐसा लगता है कि वहां का माइक काम कर रहा है।...**(व्यवधान)**

श्री बी.के. गढ़वी (बनासकंठा)**:** आप कह रहे हैं कि यह माइक काम कर रहा है और वो माइक काम नहीं कर रहा है। कृपया उनकी बात अच्छी तरह से सुनिए। आप यूं खड़े होकर इस तरह क्यों बोल रहे हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह शिकायत कर रहे हैं... **(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, जिन्होंने प्रस्ताव का समर्थन किया है, उनको मैं विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूं। समता पार्टी के श्री जार्ज फर्नान्डीज, शिव सेना के श्री सर्पोतदार, अकाली दल के नेता बरनाला जी और हरियाणा विकास पार्टी के जयप्रकाश जी, इन सब ने प्रस्ताव का समर्थन किया है। जिन्होंने आलोचना की हैं, मैं उनकी आलोचना का उत्तर दूंगा, मगर मैं विशेष रूप से श्री मुरोसो मारन का उल्लेख करना चाहूंगा।

[अनुवाद]

मैं अपने प्रिय मित्र श्री मुरसोली मारन के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ हूं...**(व्यवधान)** श्री मारन जी, ने ठीक कहा है कतिपय मुद्दों पर हमारे मतभेद होने के बावजूद, उन्होंने बड़ी उदारता से खरीद फरोख्त के मामले पर स्पष्टता पूर्वक कहा है कि हमने अपनी अल्पमत सरकार को बहुमत में बदलने के लिए सूट-केसों का उपयोग नहीं किया है। वास्तव में इन्होंने कुछ सदस्यों द्वारा हमारे ऊपर लगाए गए निराधार एवं राजनैतिक रूप से प्रेरित आरोपों का खंडन किया है। मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि थिरू मारन ने राज्यों को अधिक संसाधन उपलब्ध कराने की हमारी वचनबद्धता को सराहा है।

हमारा सदा यह विचार रहा है कि यदि राज्य कमजोर होंगे तो केन्द्र कभी भी मजबूत नहीं हो सकेगा। थिरू मारन जी हमारे एक राष्ट्र, एक जन, और एक ही संस्कृति की हमारी अवधारणा से विक्षुब्ध हैं। मुझे खुशी है कि एक राष्ट्र की हमारी अवधारणा से वह सहमत हैं। परन्तु, मुझे यहां पर यह कहना होगा कि हमारी एक जन, और एक ही संस्कृति की व्याख्या को उन्होंने पूरी तरह से गलत ढंग से लिया है। मैं स्पष्ट रूप से यह कहता हूं कि भाजपा एकरूपता के पक्ष में नहीं है। हम प्रख्यात भारत के बहुधर्म, बहुभाषीय एवं बहुजातीय स्वरूप को जानते हैं। यही विचार भारत के महान कवि श्री सुब्रहमण्यम भारती की एक कविता में प्रतिलक्षित होते हैं। उस कविता का शीर्षक है "एन थाई" अर्थात् मेरी मां। मैं उसे तमिल में पढ़ना चाहता हूं। उसमें कहा गया है कि :

"मुप्पधु कोड़ि मुगापुदायात
वयीर मोइमबुरम ओन्डूदायल
इवाल चेप्पोमोली पदी नेटटुदायल
एनिल सिंधनई औन्डूदयाल।"

श्री एन.वी.एन. सोमू : महोदय, तमिल में कविता पढ़ने के लिए आपका धन्यवाद।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह पहली बार नहीं है। मैंने संयुक्त राष्ट्र में भी अपने भाषण में तमिल में कुछ पढ़ा था।

[हिन्दी]

इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है :

"तीस कोटि मुखमंडल वाली है मेरी मां,
एक है उसकी काया और आत्मा
भाषायें वह अठारह बोलती हैं,
किन्तु एक है उसका चिन्तन।"

अध्यक्ष महोदय, मुझ पर आरोप लगाया गया है और यह आरोप मेरे हृदय में घाव कर गया है। आरोप यह है कि मुझे सत्ता का लोभ हो गया है और मैंने पिछले दस दिन में जो कुछ किया है, वह सत्ता के लोभ के कारण किया है। अभी थोड़ी देर पहले मैंने उल्लेख किया

था कि मैं 40 साल से इस सदन का सदस्य हूं। सदस्यों ने मेरा व्यवहार देखा है, मेरा आचरण देखा है। जनता दल के मित्रों के साथ मैं सत्ता में भी रहा हूं। कभी हम सत्ता के लोभ से गलत काम करने के लिये तैयार नहीं हुए। यहां पर श्री शरद पवार जी बैठे हुये हैं। जब मेरे मित्र श्री जसवंत सिंह जी भाषण कर रहे थे तो श्री शरद पवार यहां नहीं थे। उस समय श्री जसवंत सिंह जी कह रहे थे कि श्री शरद पवार ने अपनी पार्टी तोड़कर हमारे साथ सरकार बनायी थी। सत्ता के लिये बनायी थी या महाराष्ट्र के भले के लिये बनायी थी यह अलग बात है मगर उन्होंने अपनी पार्टी तोड़कर हमारे साथ सहयोग किया था। मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया। बार-बार इस चर्चा में एक स्वर सुनाई दिया कि वाजपेयी तो अच्छा हैं मगर पार्टी ठीक नहीं हैं।

कई माननीय सदस्य : यह सही बात है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : तो अच्छे वाजपेयी के लिये क्या करने का इरादा रखते हैं? अध्यक्ष महोदय, मैं नाम नहीं लेना चाहता।

मैं शरद जी का भी नाम नहीं लेना चाहता था। लेकिन पार्टी तोड़कर, सत्ता के लिए नया गठबंधन करके अगर सत्ता हाथ में आती है तो मैं ऐसी सत्ता को चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा।

"न भीतो मरणादस्मि केवलम् दूषितो यश।"

भगवान राम ने कहा था कि 'मैं मृत्यु से नहीं डरता। अगर डरता हूं तो बदनामी से डरता हूं, लोकापवाद से डरता हूं।' चालीस साल का मेरा राजनीतिक जीवन खुली किताब है। लेकिन जनता ने जब भारतीय जनता पार्टी को सबसे बड़े दल के रूप में समर्थन दिया तो क्या जनता की अवज्ञा होनी चाहिए? जब राष्ट्रपति ने मुझे सरकार बनाने के लिए बुलाया और कहा कि कल आपके मंत्रियों को शपथ विधि होनी चाहिए और 31 तारीख तक आप अपना बहुमत सिद्ध कीजिए तो क्या मैं मैदान छोड़कर चला जाता? मैं पलायन कर जाता? जिस जनता का हमने विश्वास अर्जित किया है क्या उसकी अवज्ञा करता? मैंने जब चर्चा आरंभ की थी तब इसका भी स्पष्टीकरण किया था। क्या यह तथ्य नहीं है कि हम सबसे बड़े दल के रूप में उभरे हैं? इस बारे में जो और तर्क दिये जा रहे हैं मैं उन पर आऊंगा। क्या मैं राष्ट्रपति महोदय से कहता कि नहीं, पहले मुझे जरा बात कर लेने दो। जब वह कह रहे हैं कि कल शपथ विधि होगी और मुझे समय दे रहे हैं 31 तारीख तक का, तो मैंने कहा कि 31 तारीख तक जो समय दिया जा रहा है उसका मैं सदुपयोग करूंगा, अन्य दलों से चर्चा करूंगा, उनका समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करूंगा, एक कौमन प्रोग्राम के आधार पर हम आगे बढ़ सकें, इस तरह का वातावरण बनाने की कोशिश करूंगा। इसमें क्या आपत्ति की बात है? इसमें कौन सा सत्ता का लोभ है? और फैसला केवल मेरा अकेले का नहीं था, फैसला पार्टी का था।

अध्यक्ष महोदय, जब एक बार 31 तारीख शक्ति परीक्षण के लिय तय हो गई और शक्ति परीक्षण संसद में ही हो सकता है, राष्ट्रपति भवन में या राजभवन में हो इसका तो हमने कभी प्रतिपादन नहीं किया, तो सदन की बैठक बुलाना जरूरी था। सदन की बैठक में राष्ट्रपति का अभिभाषण जरूरी था। हम तो कई और भी काम रख सकते थे। कम से कम राष्ट्रपति को उनके अभिभाषण के लिए धन्यवाद देने का काम तो कर ही सकते थे, लेकिन आपने ऐसा नहीं होने दिया और मैंने भी संदेह पैदा न हो इसलिए इस बात पर जोर नहीं दिया। जल्दी से जल्दी पहला अवसर तय किया और इसलिए 27 तारीख और 28 तारीख को आज फैसला होने जा रहा है। हम बल दे सकते थे कि हमें 31 तक का समय दिया गया है, हम कुर्सी पर बैठे रहेंगे।...**(व्यवधान)** अध्यक्ष महोदय, कमर के नीचे वार नहीं होना चाहिए। नीयत पर शक नहीं होना चाहिए। मैंने यह खेल नहीं किया है। मैं आगे भी नहीं करूंगा। लोकतंत्र एक व्यवस्था है। और अब गिनाया जा रहा है कि आपको कितने परसेंट वोट मिले। हमने जो वैस्टमिस्टर की पद्धति अपनाई है, उसमें वोट नहीं गिने जाते हैं, प्रतिशत नहीं देखा जाता है। उसमें सीटें देखी जाती है। दोनों काम साथ नहीं हो सकते। यहां लिस्ट पद्धति वाला प्रपोर्शनल रिप्रजेंटेशन नहीं है और मैं इस पद्धति के दोषों को पहले से ही इंगित करता रहा हूं। कभी कभी ऐसा हो सकता है कि जिस दल को देश में बहुमत न हो, वह दल अधिक सीटें लेने में सफल हो जाए।

कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि वोट ज्यादा हों और सीटें कम हों। एक परसेंट वोट के अंतर से केरल में संयुक्त सरकार बनी। दूसरी सरकार हट गई। एक परसेंट वोट का फर्क था। अब इस समय जो सीटों का अंतर है इसको मानकर चलना पड़ेगा। अब इस समय आपके मिलकर कितने वोट है यह गिनाया जा रहा है। तो फिर मैं गिनाता हूं आपके अलग-अलग वोट कितने हैं और वह गिनती आपके लिए घाटे की गिनती होगी। लेकिन आप कह रहे हैं कि नहीं हम तो इकट्ठे हो रहे हैं। किसलिए इकट्ठे हो रहे हैं। क्या देश में स्थिर सरकार देने के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। जवाबदेह सरकार देने के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। मैं फिर उसको दोहराना नहीं चाहता। आपका अभी तक कार्यक्रम नहीं बना है। इस कार्यक्रम को लेकर आप जनता के पास नहीं गये। जिस जनादेश की बात आप कर रहे हैं, परसेंट वोट की बात कह रहे हैं, वह अलग-अलग प्रदेशों में मिला है। अलग-अलग कारणों से मिला है। तमिलनाडु में मेरा तो कोई झगड़ा डी.एम.के. से नहीं था। लड़ाई तो कांग्रेस से थी और यह स्थिति आंध्र में भी हुई। आंध्र में हम तो लड़ाई में कहीं नहीं थे, लड़ाई कांग्रेस के साथ हो रही थी और कहते हैं जनादेश हमारे खिलाफ चला गया है। यह कैसा जनादेश है? आप कहिए, आप कह रह हैं, दबे-दबे कह रहे हैं, साफ-साफ कहिये, खुलकर कहिए कि हम किसी भी कीमत पर आपको सत्ता में नहीं आने देंगे। यह भाषा ठीक नहीं है। इस भाषा के पीछे जो भावना है वह और भी गलत है। हिटलर का हौवा खड़ा किया जा रहा है इस सदन में, फासिस्टवाद पैदा हो रहा है। यह डर दिखाया जा रहा है। यहां जो पहली बार आये हैं, जिन्हें सदन की मर्यादा का भी पता नहीं है, वे इस तरह की भाषा बोल रहे है। मैं 40 साल

से पार्लियामेंट में हूं। हम दल के रूप में काम कर रहे हैं। लोकतंत्र के आधार पर काम कर रहे हैं। हम चुनाव लड़ते हैं।

श्री मुलायम सिंह यादव : 20 साल से हम भी विधान सभा में हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया सुनने का धैर्य रखिए।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : अध्यक्ष महोदय, ये हमको मर्यादा सिखायेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जनादेश कांग्रेस के खिलाफ है। कांग्रेस की संख्या आधी रह गई है। अलग-अलग क्षेत्रों में, अलग-अलग ढंग से लोगों ने अपनी राय प्रकट की है। अब सब इकट्ठे आ रहे हैं और कांग्रेस का समर्थन प्राप्त कर रहे हैं और कांग्रेस समर्थन देने को तैयार है। कल मेरे मित्र श्री जार्ज फर्नान्डीज ने जो कुछ कहा मैं उसको दोहराना नहीं चाहता। अगर आप चाहें तो फैसला कर सकते है कि भई हमने एक दूसरे को गाली दी होगी। मगर चलो छोड़ो आज जो सबको मिलकर बी.जे.पी. को गाली देना है। अगर यह सामूहिक निर्णय है तो मुझे कुछ नहीं कहना है। लेकिन इस तरह का निर्णय नकारात्मक होगा, इस तरह का निर्णय प्रतिक्रियात्मक होगा, इस तरह का निर्णय केवल हमें आने से रोकने के लिए होगा और यह लोकतंत्र को स्वस्थ बनाने वाली परम्परा नहीं डालेगा।

आज मैं आपको एक चेतावनी देना चाहता हूं। हम तो प्रतिपक्ष में बैठने के लिए तैयार हैं। अध्यक्ष महोदय, जब मैं राजनीति में आया, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं एम.पी. बनूंगा। मैं पत्रकार था और यह राजनीति, जिस तरह की राजनीति चल रही है, मुझ रास नहीं आती।

अपराह्न 4.00 बजे

मैं तो छोड़ना चाहता हूं मगर राजनीति मुझे नहीं छोड़ती है। फिर मैं विरोधी दल का नेता हुआ, आज प्रधान मंत्री हूं और थोड़ी देर बाद प्रधान मंत्री भी नहीं रहूंगा। प्रधान मंत्री बनते समय मेरा हृदय आनन्द से उछलने लगा हो, ऐसा नहीं हुआ। जब मैं सब कुछ छोड़छाड़ कर चला जाऊंगा तब भी मेरे मन में किसी तरह की म्लानता होगी, ऐसा होने वाला नहीं है। लेकिन मैं कुछ मुद्दों को फिर उठाना चाहता हूं।

आज हमारे ऊपर कुछ नये आरोप लगाए जा रहे हैं, आरोप नहीं आरोपों की झड़ी लगाई जा रही है कि आपने पार्टी के अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों को छोड़ दिया। राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण में राम मन्दिर की चर्चा नहीं है, धारा 370 का उल्लेख नहीं है, शादी-ब्याह के संबंध में समान कानून बनाने का कोई जिक्र नहीं है, आपने तो स्वदेशी का भी परित्याग कर दिया। ये सारी बातें इस तरह से कही गई जैसे कहने वाले हमारे पास इस दृष्टिकोण से बड़े दुखी है जबकि वे इन बातों की सदा आलोचना करते रहे हैं। हमें इसलिये दोषी ठहराते रहे हैं क्योंकि हम राम मंदिर बनाना चाहते हैं, धारा 370 को समाप्त करने की बात कर रहे हैं, फिर देश की एकता कैसे कायम रखेंगे। यह पूछते हैं शादी ब्याह का समान कानून हो, भले ही संविधान में लिखा हो, सुप्रीम कोर्ट ने उस पर मुहर लगा दी हो, मगर आप कैसे कह सकते हैं। अगर आप कहते हैं तो देश की एकता को तोड़ने वाले होंगे। अगर हम कहते हैं कि नहीं, यह हमारे इस समय के कार्यक्रम में नहीं है ...**(व्यवधान)** और इसलिये नहीं है कि हमारे पास अनुभव नहीं है ...**(व्यवधान)**

हम बहुमत के लिये लड़ रहे हैं। आज हमें जो जनमत मिला है, वह सभी कार्यक्रमों को लागू करने लायक नहीं है अगर आपको जनमत ने अस्वीकार कर दिया है तो हमें भी पूरी तरह स्वीकार नहीं किया है। हम तो बहुमत चाहते थे लेकिन बहुमत हमें नहीं मिला। अब जबकि हम सबसे बड़े दल के रूप में उभरे हैं तो हमारा प्रयास है कि आम सहमति से कोई चीज बने, कोई चीज चले और इसीलिये हमने विवाद की बातों का उल्लेख नहीं किया। इस पर आपको क्या आपत्ति है।

अभी युनाइटेड फ्रंट बनने जा रहा है...**(व्यवधान)** बन गया है तो अच्छी बात है, अभी उसका कार्यक्रम बनने वाला है...**(व्यवधान)** वह भी बन गया तो क्या मार्कसिस्ट पार्टी की जो विचारधारा है, मार्कसिस्ट पार्टी के जितने कार्यक्रम है क्या उन्हें ज्यों का त्यों पूरे का पूरा उसमें समविष्ट कर लिया गया है। अगर कर लिया गया है तो फिर मार्कसिस्ट पार्टी सरकार से दूर क्यों रह रही है। जब संयुक्त मोर्चा बनता है, अनेक दल निकट आते हैं...**(व्यवधान)**

जब अनेक दल निकट आते हैं तो हरेक को कुछ न कुछ चीजें छोड़नी पड़ती है। 1977 में भी हम धारा 370 को समाप्त करने के समर्थक थे-यहां राम विलास पासवान जी बैठे हैं। 1977 में हम एटम बम बनाने के हक में थे लेकिन जब हमने देखा कि लोकतंत्र परं संकट आया है तो हमने फैसला किया कि बाकी सारी बातें ऐसे समय एक तरफ रखने की जरूरत है और लोकतंत्र को बचाने की आवश्यकता है- एमरजैंसी के कारण लोकतंत्र खतरे में पड़ा था, देश एक जेलखाने में बदल गया था। हमने कहा कि सब मिलकर चलें और आने वाले अधिनायकवाद को रोकें लेकिन उस समय हमें किसी ने नहीं कहा कि आप धारा 370 को कहां छोड़ आए। किसी ने नहीं कहा और ठीक ही नहीं कहा। जब आप संयुक्त मोर्चा बनायेंगे तो हरेक पार्टी को थोड़ा-थोड़ा अपना छोड़ना पड़ेगा, अपने विचारों को, कार्यक्रमों को थोड़ा अलग-अलग रखना पड़ेगा। राष्ट्रपति ने अगर 31 तारीख तक का समय दिया तो इसीलिए दिया क्योंकि राष्ट्रपति को मालूम था कि मेरा बहुमत नहीं है। लेकिन बड़ी पार्टी के रूप में उन्होंने बुलाया और

31 तारीख तक का समय दिया, और दलों से बात करो, विचार विनिमय करो, इस बात का प्रयत्न करो कि कोई स्थिर सरकार बन जाए, स्थायी सरकार बन जाए। यह और देशों में भी होता है और यह होने लगा था।

श्री बसुदेव आचार्य : यह हुआ क्यों नहीं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इसलिए कि आपने सबसे ज्यादा टांग अड़ायी।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप इस वास्तविकता पर विचार क्यों नहीं करते कि आप देश में बिल्कुल अलग-थलग हैं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम अलग-थलग नहीं हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : जी हां, आप अलग-थलग हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमारे समर्थन में, हमारे साथ कोई नहीं है और अब जब हम कहें कि हमारे साथ अकाली दल है जो अभी चुनाव जीतकर आया है...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : ऐसा इसलिए है क्योंकि वह भारतीय जनता पार्टी के समर्थक नहीं हैं, बल्कि कांग्रेस विरोधी हैं इसीलिए, वह आपके साथ हैं...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : तो फिर आप हमारे साथ क्यों नहीं आ सकते?

कई माननीय सदस्य : तो क्या आप कांग्रेस समर्थक हैं? ...**(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप अपने सदस्यों से अच्छा व्यवहार करने के लिए कहें। आप यहां चालीस वर्षों से हैं और मैं यहां 25 वर्षों से हूं। मैं भी सम्मान प्राप्त करने का हकदार हूं...**(व्यवधान)** माननीय प्रधान मंत्री हर समय जो बात कह रहे हैं, मेरे विचार में वह यही है कि उन्हें सत्ता में रखना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व है। कल से हम इसी बात का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं। अगर माननीय सदस्यगण का बहुमत आपका समर्थन नहीं कर रहा है, तो क्या यह अन्य सदस्यों का दोष है, जो आपका समर्थन नहीं कर रहे हैं? मेरे अपने विचार हैं, अपनी नीतियां और कार्यक्रम हैं। वह हम पर हर समय इस प्रकार से आरोप लगा रहे हैं, जैसे कि हम उनके साथ गठजोड़ कर रहे हैं। क्या बहुमत के बिना उनका सत्ता में बने रहना, इससे उचित सिद्ध हो जायेगा? क्या यही तरीका है, जिससे आप अपनी बात कहने का प्रयास कर रहे हैं?

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कल से मैं आलोचना सुन रहा हूं और जरा सी आलोचना इनसे सहने नहीं हो रही है।...**(व्यवधान)** अगर मतदाता ने किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं दिया है तो क्या मेरा दोष है? हमें सबसे बड़ी पार्टी के रूप में काम करने का अवसर दिया क्योंकि लोग परिवर्तन चाहते थे। क्या यह भी हमारा दोष है?

[अनुवाद]

श्री बसुदेव आचार्य : बहुमत प्राप्त किये बिना ही?

अध्यक्ष महोदय : आचार्य जी, कृपया उनकी बात में व्यवधान मत पहुंचाइये।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं पश्चिमी बंगाल की बात नहीं कर रहा हूं। मैंने कल उसका उल्लेख किया था। इनकी किस तरह से सीटें घटी हैं, किस तरह से वोट घटे हैं, वह बात अलग है।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : लेकिन केवल यही एक ऐसी सरकार है जो दो-तिहाई बहुमत के साथ वापिस आई है। कृपया यह बात मत भूलिए। यह पुनः पांचवी बार सत्ता में आई है। यह एक रिकार्ड है।

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, वह ठीक है। कृपया प्रधान मंत्री को बोलने दीजिए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यह बात मेरी समझ में नहीं आती।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

कुमारी ममता बनर्जी : मैं उनके भाषण में व्यवधान नहीं डालना चाहती क्योंकि प्रधान मंत्री बोल रहे हैं। लेकिन श्री सोमनाथ चटर्जी ने जो कुछ कहा है, उस पर मुझे कुछ आपत्तियां हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : दो दल अलग-अलग चुनाव लड़े थे, एक-दूसरे के विरूद्ध चुनाव लड़े थे। वे अब साथ आने के बाद यह कह रहे हैं कि मेंडेट बी.जे.पी. के खिलाफ मिला है और उसके लिए 82 फीसदी लोगों ने वोट दिया है। यह विचित्र तर्क दिया जा रहा है।

श्री बीजू पटनायक : इस तर्क का जवाब है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप यूनाइट कर चुके हैं, यह बहुत अच्छी बात है।

श्री बीजू पटनायक : आपके सामने है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमारे सामने नहीं है। ...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री बीजू पटनायक : क्या मैं श्री वाजपेयी से एक प्रश्न कर सकता हूं।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : श्री बीजू, वे आपकी बात नहीं सुनते। आप उनकी सहायता का प्रयास क्यों कर रहे हैं? वे आपकी बात नहीं सुनते।

श्री बीजू पटनायक : आप क्या चाहते हैं? आप इकत्तीस तारीख तक का समय चाहते थे। लेकिन आप क्या प्रस्ताव रखना चाहते हैं?...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : थोड़ा धैर्य रखिए। **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

इतनी चर्चा चली। पहले तो आप चर्चा ही नहीं चाहते थे और चर्चा चली, तो सदस्यों ने रूचि ली और अच्छी बहस हुई, और निर्णय का वक्त आ जाएगा, आ गया। अभी भी आपको परेशानी हो रही है। इतनी जल्दी सत्ता में जाने की।

मुझे वह दिन याद है जब जनता पार्टी को तोड़कर आप चौ. चरण सिंह जी को साउथ ब्लाक ले गए थे और उनकी कुर्सी के नीचे खड़े होकर,...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री बीजू पटनायक : हमें रिकार्ड ठीक करना चाहिये... **(व्यवधान)**

[हिन्दी]

मैंने तीन लैटर्स चौ. चरण सिंह के सामने जला दिए। यह बीजू पटनायक ने किया। मैंने जनता पार्टी को नहीं तोड़ा। **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

आप ये सब कैसे कह सकते हैं?...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : बीजू पटनायक जी, आप बैठ जाइये। प्रधानमंत्री को बोलने दीजिये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मुझे अपना बहुमत बनाने के लिए जो समय मिला था, मैंने उसका उपयोग किया। मैंने अनेक दलों से अलग-अलग बातें की। कुछ दल हमारे साथ आए हैं। कुछ दलों ने अपनी कठिनाई प्रकट की है। कुछ दलों का कहना है कि आपके साथ आने में हमें एक ही आपत्ति है कि हमारे कुछ वोट जाने का खतरा है। भारतीय जनता पार्टी के सहयोग के कारण, अगर वोट जाते हैं, तो मैं समझ सकता हूं कि हर राजनैतिक दल को वोटो की चिन्ता करनी है, लेकिन यह वोटो का खेल किस सीमा तक जाएगा, किस हद तक जाएगा? क्या इसके सामने देश हित की उपेक्षा कर दी जाएगी? हम अगर मायनारिटी की बात करते हैं, उन्हें पूरा संरक्षण मिलना चाहिए, बराबर का अवसर मिलना चाहिए, समान अधिकार होना चाहिए, तो हमें कहा जाता है कि हम जो कुछ कहते हैं, उस पर आचरण नहीं करते। आखिर सदन में बातचीत हो सकती है। चर्चा हो सकती है। जिन प्रदेशों में हमारी सरकार बनी हैं वहां आचरण हो रहा है आप हमें केन्द्र में समय देकर देखें, हम सारी बातों का अमल में लाकर दिखा देंगे। यह मेरी समझ में नहीं आया कि आज सबसे बड़ी मायनारिटी है, उसकी बात तो सब करते हैं, लेकिन जो दो प्रतिशत है, उसकी कोई चिन्ता नहीं करता। अभी बरनाला जी का दर्द आपने सुना, उसकी पीड़ा किसी को नहीं है?

अध्यक्ष महोदय, मुझे वह दिन याद है, दिल्ली में दंगों के बाद और सिख भाइयों के कत्लेआम के बाद, मेरा एक भा.ज.पा. का कार्यकर्ता, मुझसे रात के अंधेरे में मिलने के लिए आया। मैं उसको पहचान नहीं सका क्योंकि उसके बाल कटे हुए थे। उसके केश कटे हुए थे। दाढ़ी कटी हुई थी। मैंने कहा कि तुम वही हो? तुमने यह क्या रूप बनाया है, रात में क्यों आए हो, छिप कर क्यों आए हो, चोरी-छिपे क्यों आए हो? उसने कहा कि मैं दिन में आपके पास नहीं आ सकता हूं। मैं केश धारण कर के बाहर नहीं निकल सकता हूं। इसलिए मैंने केशों की बलि चढ़ा दी है और मैंने दाढ़ी से भी छुटकारा मांग ली है। मैं आपके पास अपना दुखड़ा रोने के लिए, अपनी व्यथा कहने के लिए आया हूं। उस समय हमने दिल्ली के सिखों की वकालत की थी। चुनाव में हमें घाटा हुआ। सिख विरोधी भावना भड़का कर कांग्रेस ने सत्ता हथिया ली। हमने ऐसा नहीं किया।...**(व्यवधान)**

श्री एलियास आजमी (शाहबाद) **:** आप मुसलमान विरोधी भावना भड़का कर यहां पर बैठे हैं।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह गलत है।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मगर आप सिखों पर हुए अत्याचार की निन्दा नहीं करते हैं।...**(व्यवधान)**

श्री एलियास आजमी : बिल्कुल करते हैं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : कृपया कार्यवाही वृतांत पर नजर डालिए।...**(व्यवधान)**

श्री वसुदेव आचार्य : हमने अनेक बार यह मामला उठाया है। ...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइये।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री एलियास आजमी : हमने बहुत बार किये हैं।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सारे अपराधी पकड़े नहीं गये हैं। ...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : सिखों को टाडा में किसने बंद किया। ...**(व्यवधान)** उनको मैंने छुड़वाया है।...**(व्यवधान)**

श्री मुख्तार अनीस (सीतापुर) **:** जो कांग्रेस थे, उन्होंने ही भाजपा बनकर सिखों को लखनऊ से लूटा।...**(व्यवधान)**

श्री एलियास आजमी : मैंने दर्जनों को अपनी आंखों से देखा है। कांग्रेसी और भाजपाई साथ-साथ थे।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरे मित्र श्री मुलायम सिंह जी इस मामले में न ही बोले तो ज्यादा अच्छा होगा। उनके शासन काल में किस तरह से उत्तरांचल की मांग करने वाली महिलाओं के साथ जो कि दिल्ली में प्रदर्शन करने आना चाहती थी, बलात्कार हुआ, जिसकी पुष्टि कोर्ट ने कर दी। उसके बाद मुलायम सिंह जी कुछ कहने के लायक नहीं रहते...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : यह कितने शर्म को बात है। सूरत, अहमदाबाद, बम्बई...**(व्यवधान)** कानपुर में लड़कियों को नंगा किया गया। यहां पर से सब बैठे हुए हैं।...**(व्यवधान)**

श्री मुख्तार अनीस : प्रधान मंत्री जी आप सूरत की चर्चा करिये। जहां भाजपा के लोगों ने मुसलमानों की औरतों को नगा किया है।...**(व्यवधान)**

श्री एलियास आजमी : कांग्रेसी का राज है।...**(व्यवधान)** कांग्रेस के राज में नंगा किया गया।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, ये सभी मित्र कल से लेकर आज तक बोलते रहे।...**(व्यवधान)** अब मेरी बारी आयी है।...**(व्यवधान)** ये मेरा मुंह बंद करना चाहते हैं लेकिन यह होने वाला नहीं है। अगर ये संख्या के आधार करने का प्रयास करेंगे तो हमें सदन के बाहर इस विचारों की लड़ाई की ले जाना पड़ेगी। ...**(व्यवधान)**

श्री मुलायम सिंह यादव : आप जिस क्षेत्र में चाहें, जिस मैदान में चाहें, हम तैयार है।...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, जहां से मैंने आरम्भ किया था वहां अपने भाषण को ले जाना चाहता हूं। देश में ध्रुवीकरण नहीं होना चाहिए। न सांप्रदायिक आधार पर, न जातीय आधार पर, न राजनीति दो खेमों में बंटनी चाहिए कि जिनमें संवाद न हो, जिनमें चर्चा न हो। देश आज संकटों से घिरा हैं और ये संकट हमने पैदा नहीं किये हैं। जब कभी भी आवश्यकता पड़ी, संकटों के निराकरण में हमने उस समय की सरकार की मदद की। उस समय के प्रधान मंत्री श्री नरसिंह राव जी ने भारत का पक्ष लेने के लिए मुझे विरोधी दल के नेता के नाते जिनेवा भेजा। पाकिस्तानी मुझे देखकर चमत्कृत रह गये। उन्होंने कहा कि ये कहां से आये हैं? क्योंकि उनके यहां विरोधी दल का नेता ऐसे राष्ट्रीय कार्य में कभी सहयोग देने के लिए तैयार नहीं होता। वह हर जगह अपनी सरकार को गिराने के काम में लगा रहता है। यह हमारी परम्परा नहीं है, यह हमारी प्रकृति नहीं है। मैं चाहता हूं कि यह परम्परा बनी रहे, यह प्रकृति बनी रहे। सत्ता का खेल तो चलेगा। सरकारें आयेंगी, जायेंगी, पार्टियां बनेगी, बिगड़ेगी, मगर यह देश रहेगा। इस देश का लोकतंत्र अमर रहेगा। क्या यह आज के वातावरण में कठिन काम नहीं हो गया है? यह चर्चा तो आज समाप्त हो जाएगी मगर कल से जो अध्याय शुरू होगा, उस अध्याय पर थोड़ा गौर करने की जरूरत है। यह कटुता बढ़नी नहीं चाहिए। मैं नहीं जानता युनाइटेड फ्रंट ने श्री देवेगौड़ा को किस आधार पर अपना चौथे नम्बर का नेता चुना है। वे युनाइटेड फ्रंट की फर्स्ट च्वाइस नहीं थे, वे तो फोर्थ च्वाइस थे। वे उनकी फोर्थ च्वाइस थे मगर अब फर्स्ट च्वाइस होने वाले हैं।...**(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय, मुझे खेद है कि इस चर्चा में ऐसे संगठनों का नाम लिया गया, उन्हें यहां घसीटने की कोशिश की गई जो स्वतंत्र संगठन हैं, जो राष्ट्र निर्माण के, चरित्र निर्माण के कामों में लगे हैं। मेरा इशारा मेरा उल्लेख आर.एस.एस. से है। आर.एस.एस. के विचारों से किसी का मतभेद हो सकता है लेकिन आर.एस.एस. पर जिस तरह के आरोप लगाए गए, उस तरह के आरोपों की कोई आवश्यकता नहीं थी। कांग्रेस पार्टी के और अन्य दलों के लोगों के दिलों में भी आर. एस.एस. के रचनात्मक कार्य के लिए आदर है, सहयोग है। अगर वे दुखियों की बस्ती में जाकर काम करते हैं, अगर वे जाकर आदिवासी इलाकों में शिक्षा का प्रसार करते हैं तो इसके लिए उनका अभिनन्दन होना चाहिए। इसलिए उनको पूरा सहयोग दिया जाना चाहिए।... **(व्यवधान)**

श्री इन्द्रजीत गुप्त : नाथू राम गोडसे कौन थे?...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : युनाइटेड फ्रंट में भी आप जिन्हें नेता बनाने जा रहे हैं, देवेगौड़ा जी भी आर.एस.एस. की अच्छाइयों से परिचित हैं और आर.एस.एस. की प्रशंसा कर चुके हैं।...**(व्यवधान)**

श्री बीजू पटनायक : अगर ये है तो वाजपेयी जी, उनको आपको समर्थन करना चाहिए।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : पटनायक जी, क्या आप अपने स्थान पर बैठ जाएंगे?

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया अध्यक्षपीठ को संबोधित करें।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं अपने दल के सदस्यों से कहना चाहता हूं...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : नहीं, इतना ही पर्याप्त है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री राम विलास पासवान : उनके प्रोवोक करने में क्यों आ रहे हैं। आप टाइम देखिये, क्या होता है। उनको जो बोलना है, बोलने दीजिए, उनके प्रोवोकेशन में मत आइये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मेरे मित्रों को समझना चाहिए कि मैं भी निर्वाचित होकर आया हूं। उन्हें यह भी समझना चाहिए कि मैं सबसे बड़ी पार्टी के नेता के नाते राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ हूं।

राष्ट्रपति के निर्देश के कारण और निर्देश के आधार पर मैं विश्वास मत लेकर आया हूं। अब अगर चर्चा होती है और उसमें बीजू पटनायक जैसे वरिष्ठ नेता मुझे टोकते हैं...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : पटनायक जी, आपको हरेक बात पर प्रतिक्रिया अभिव्यक्त नहीं करनी है। आप देश के वरिष्ठतम नेताओं में से एक हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात का उल्लेख कर रहा था कि इस देश में जो देशभक्त हैं, विवेकवान हैं और जो अन्तःकरण से भारत का भला चाहते हैं और वह आर.एस.एस. के सम्पर्क में आये हैं, वह जानते हैं कि यह संगठन देशहित में के लिए समर्पित है और अभी **(व्यवधान)**

श्री इन्द्रजीत गुप्त : और नाथू राम गोडसे कौन था, उसने देश के हित में क्या काम किया?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं उसका ताजा उदाहरण देता हूं। मैं इस बात का उल्लेख नहीं कर रहा कि [illegible] के बाद पंडित नेहरू की नेतृत्व में रिपब्लिक डे परेड के दौरान जिन स्वयं सेवी संगठनों को अपनी एकजुटता प्रकट करने के [illegible] गया था उनमें आर.एस.एस. भी था। उसमें कम्युनिस्ट नहीं थे। कम्युनिस्ट कहां थे ..**(व्यवधान)** मैं कहना नहीं चाहता। लेकिन लाल बहादुर शास्त्री के जमाने में, वह भी भारत के प्रधान मंत्री थे, लोकप्रिय प्रधान मंत्री थे, जब पाकिस्तान के साथ हमारी लड़ाई हुई और उन्हें दिल्ली में ट्रेफ्रिक कंट्रोल करने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी तो आर.एस.एस. के स्वयंसेवक यहां कंट्रोल करते थे, ट्रेफ्रिक को कंट्रोल करते थे।...**(व्यवधान)**

अभी इमरजेंसी के खिलाफ बैंगलौर में एक सम्मेलन हुआ था, जिसको सैकिण्ड फ्रीडम स्ट्रगल की संज्ञा दी गई थी, उसमें श्री देवेगौड़ा उपस्थित थे। उन्होंने जो भाषण दिया, उसका अंश मेरे पास है, मैं कोट कर रहा हूं :

[अनुवाद]

राष्ट्रीय स्वयं सेवक एक बेदाग संगठन है। मेरे आरंभ के वर्षों में ...**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री राम विलास पासवान : वह तो हैं नहीं, देवेगौड़ा जी तो यहां हैं नहीं कि वह खण्डन कर सके।...**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री श्रीकान्त जेना : महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। सभा में किसी सदस्य की अनुपस्थिति में...

अध्यक्ष महोदय : आप नियम पुस्तिका लेकर उससे क्यों नहीं पढ़ते?

श्री श्रीकान्त जेना : मैं नियम 376 में अधीन व्यवस्था का प्रश्न उठा रहा हूं।

[हिन्दी]

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : आज रात को जाकर अपना नेता बदल लेना ..**(व्यवधान)** अपने नेता की प्रशंसा भी नहीं सुनी जा रही है। **(व्यवधान)**

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : न्यायविद् लोढा जी, मैंने उन्हें समय दिया है। मैं आपको भी बोलने का अवसर दूंगा।

श्री श्रीकान्त जेना : मैं केवल इस बात की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि इस सभा में किसी भी सदस्य को कोई दस्तावेज उद्धृत करने का पूरा अधिकार है.. **(व्यवधान)** कृपया एक मिनट रूकिये, मुझे अपनी बात समाप्त करने दीजिये। लेकिन महोदय, बिना किसी दस्तावेज, प्रमाणीकरण और आपकी पूर्वानुमति के बिना [illegible] सदस्य अनुपस्थित हो, उसके बारे में कुछ भी सार्वजनिक नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि उसे इस सभा में उत्तर देने का कोई अवसर नहीं है। **(व्यवधान)**